मैला आँचल

(फणीश्वरनाथ रेणु)

फणीश्वरनाथ रेणु: परिचय

फणीश्वर नाथ रेणु (1921-1977) का जन्म 4 मार्च 1921 को औराही हिंगना, जिला पूर्णियां, बिहार में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा फारबिसगंज तथा अररिया में पूरी करने के बाद इन्होंने मैट्रिक नेपाल के विराटनगर आदर्श विद्यालय से कोईराला परिवार में रहकर की। इन्होंने इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में किया जिसके बाद वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। रेणुजी आजीवन शोषण और दमन के विरूद्ध संघर्षरत रहे। इसी प्रसंग में सोशलिस्ट पार्टी से जुड़े व राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी की।

1942 के भारत-छोड़ो आंन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 1950 में नेपाली दमनकारी राजसत्ता के विरूद्ध सशस्त्र क्रांति के सूत्रधार रहे। 1954 में 'मैला आँचल' उपन्यास प्रकाशित हुआ तत्पश्चात् हिन्दी के कथाकार के रूप में अभूतपूर्व प्रतिष्ठा मिली। जेपी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की और सत्ता द्वारा दमन के विरोध में 'पद्मश्री' का त्याग कर दिया।

रेणुजी की लेखन-शैली वर्णनात्मक थी जिसमें पात्र के प्रत्येक मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण लुभावने तरीके से किया होता था। पात्र का चरित्र-निर्माण काफी तेजी से होता था क्योंकि पात्र एक सामान्य-सरल मानव मन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। इनकी लगभग हर कहानी में पात्र की सोच घटनाओं से प्रधान होती थी।

'एक आदिम रात्रि की महक' इसका एक सुंदर उदाहरण है। इनकी लेखन-शैली प्रेमचंद से काफी मिलती थी और इन्हें आजादी के बाद का प्रेमचंद की संज्ञा भी दी जाती है। अपनी कृतियों में उन्होने आंचलिक पदों का बहुत प्रयोग किया है। यदि अगर आप उनके क्षेत्र से हैं तो ऐसे शब्द, जो आप निहायत ही ठेठ या देहाती समझते हैं, भी देखने को मिल सकते हैं।

प्रकाशित कृतियाँ

उपन्यास - मैला आंचल, परती परिकथा, जूलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड
कथा-संग्रह - एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी

प्रसिद्ध कहानियाँ - मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम), एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस, संवदिया

रेणुजी को जितनी ख्याति हिंदी साहित्य में अपने उपन्यास 'मैला आँचल' से मिली, उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है। इस उपन्यास के प्रकाशन ने उन्हें रातों -रात हिंदी के एक बड़े कथाकार के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। कुछ आलोचकों ने इसे गोदान के बाद हिंदी का दूसरा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित करने में भी देर नहीं की।

हालाँकि ख्याति ने विवाद भी कम नहीं खड़े किए उनकी प्रसिद्धि से जलने वालों ने इसे सतीनाथ भादुरी के बंगला उपन्यास 'धोधाई चरित मानस' की नकल बताने की कोशिश की, पर समय के साथ इस तरह के झूठे आरोप ठंडे पड़ते गए। रेणुजी के उपन्यास लेखन में 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' तक लेखन का ग्राफ ऊपर की ओर जाता है पर इसके बाद के उपन्यासों में वो बात नहीं दिखी।

फिल्म 'तीसरी कसम'

रेणुजी की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर आधारित फिल्म 'तीसरी कसम' ने भी उन्हें काफी प्रसिद्धि दिलवाई। इस फिल्म में राजकपूर और वहीदा रहमान ने मुख्य भूमिका में अभिनय किया था। तीसरी कसम को बासु भट्टाचार्य ने निर्देशित किया था और इसके निर्माता सुप्रसिद्ध गीतकार शैलेन्द्र थे। यह फ़िल्म हिंदी सिनेमा में मील का पत्थर मानी जाती है। कथा-साहित्य के अलावा उन्होंने संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज आदि विधाओं में भी लिखा। इसके अतिरिक्त वे 'दिनमान'

पत्रिका में रिपोर्ताज भी लिखते थे। 'नेपाली क्रांति कथा' उनके रिपोर्ताज का उत्तम उदाहरण है।

मैला आँचल का नामकरण

किसी भी रचना का नाम या शीर्षक वह कुंजी है जिसके माध्यम से हम उसके कथा-तिलिस्म में पहुंचते हैं। प्रायः यह बात कही जाती है कि किसी भी रचना का शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो कहीं-न-कहीं उसकी कथावस्तु को रिप्रजेंट (प्रतिनिधित्व) करता हो।

रचनाओं का नामकरण कई आधारों पर किया जाता है। जैसे, नायक-नायिका के नामों के आधार पर- सुखदा, निर्मला, शेखर, रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि। कई रचनाओं का नाम स्थान-विशेष के आधार पर भी रखा जाता है। जैसे-साकेत, पंचवटी, कुरुक्षेत्र इत्यादि। शीर्षक और नामकरण करते समय रचनाकार व्यंजनात्मक और लक्षणात्मक नामों को भी आधार बनाता है। जैसे-गोदान, नदी के द्वीप, आग और पानी, झूठा-सच इत्यादि।

जहां तक मैला आँचल के नामकरण और उसकी सार्थकता का सवाल है तो इसे हम व्यंजनात्मक अर्थ में ही समझ सकते हैं। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि नामकरण ऐसा होना चाहिए जो कथावस्तु का प्रतिनिधित्व करता हो। रेणुजी इस उपन्यास में भारत के एक गांव की कथा कहते हैं। भारत को माता के रूप में चित्रित करने की परिपाटी रही है। यह भी बार-बार कहा जाता है कि भारत गांवों का देश है, लेकिन यह गांव आज भी काफी पिछड़ा है।

मैला आँचल का 'मैला' शब्द पिछड़ेपन, गरीबी, अशिक्षा इत्यादि का प्रतीक है। 'आँचल' शब्द एक खास क्षेत्र का प्रतीक भी है। साथ ही, इसका उपयोग राष्ट्रीय संदर्भ में भी किया जा सकता है। जिस तरह पहनने वाली साड़ी में आँचल एक खास क्षेत्र को ही कहते हैं, संपूर्ण साड़ी को नहीं, उसी तरह रेणुजी ने भी भारत के एक खास इलाके के एक गांव की कथा को यहां चित्रित किया है। चूंकि यह क्षेत्र धूल-धूसरित है, इसलिए रेणु उसे मैला आँचल कहते हैं। लेकिन जिस तरह साड़ी के आँचल से हम समग्र साड़ी का आकलन कर सकते हैं, उसी तरह यहां मेरीगंज को भी प्रतीक मानकर भारतीय गांव की दशा और दुर्दशा को भी देखा जा सकता है। मेरीगंज में जैसी जिंदगी है, कमोवेश उत्तर भारत के सभी गांवों में आज भी वैसी ही जिंदगी दिखाई देती है। इस अर्थ में भी भारत का वह विशाल आँचल (गांव) मैला ही है।

उपन्यास की भूमिका में रेणुजी ने स्वयं लिखा है- ''इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरुपता भी।'' यहां कीचड़, कांटे, कुरुपता आदि ही ऐसे तत्व हैं जो आँचल को मैला कर रहे हैं। लेकिन साथ ही, इसमें चंदन और सुंदरता भी है। यह चंदन और सुंदरता गांव की रागात्मकता और जनजीवन की जिजीविषा में देखी जा सकती है। इस प्रकार, इन सभी को मिलाकर इस उपन्यास में जो कथा-परिदृश्य निर्मित हुआ है, उसे ही रेणुजी ने 'मैला आँचल' का नाम दिया है। यह नामकरण उपन्यास के उद्देश्य को व्यक्त करने में पूर्णतः सार्थक है।

मैला आँचलः मूल संवेदना

मैला आँचल हिन्दी उपन्यास की एक महत्वपूर्ण तथा चर्चित कड़ी है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1954 में हुआ। कोई भी रचना अपने सामाजिक-सांस्कृतिक व ऐतिहासिक परिवेश की परिणति होती है और इस रूप में साहित्यिक कृतियां सांस्कृतिक इतिहास भी होती हैं।

मैला आँचल में रेणु ने 1946-48 के समय को केन्द्र में रखा है, यानि आजादी से एक-दो वर्ष पूर्व और आजादी से कुछ दिन बाद तक। इस रूप में पहला द्वंद्व यहां आजादी को लेकर ही दिखता है। एक तरफ आजादी से मोह दूसरी तरफ आजादी से मोह-भंग। एक तरफ गांधी के नेतृत्व में 15 अगस्त 1947 को मिली आजादी का जश्न, वहीं दूसरी तरफ आजादी से जुड़े स्वप्नों का टूट जाना।

मैला आँचल में कोई सुसंगत कथा नहीं है। मेरीजंग नाम का एक गांव है जो बिहार के एक अति पिछड़े इलाके में शामिल है। रेणु इसी मेरीगंज की कथा कहते हैं। एक अंचल को वह पूरी धड़कनों और जीवंतता के साथ प्रस्तुत करते हैं। वहां का रहन-सहन, वहां की मान्यताएं, वहां का लोक-जीवन सभी को रेणु प्रमुखता देते हैं। ऐसा लग रहा है कि जैसे वे अपनी तरफ से कोई कथा न कहकर मेरीगंज में खुद मौजूद हैं और वहां की रोजमर्रा की जिंदगी को देख रहे हैं। उस समग्र जीवन में अच्छाइयां भी है और बुराइयां भी।

रेणु अपनी तरफ से किसी से परहेज नहीं करते। शायद जीवन इन्हीं द्वंद्वों से होकर गुजरता है। रेणु इस द्वंद्व को समग्रता में पकड़ते हैं। मैला आँचल की भूमिका में वह स्पष्ट रूप से कह देते हैं- ***''इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरुपता भी। मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ खड़ा हूं।''*** रेणु कथा के माध्यम से जिस जीवन को उभारना चाहते हैं वह द्वंद्वों से भरा रहता है।

मैला आँचल में अभिव्यक्त जीवन तथा द्वंद्व को हम तीन महत्वपूर्ण दृष्टियों से देख सकते हैं-

1. ***रचनाकार की दृष्टि के माध्यम से।***
2. ***अभिव्यक्ति कथा के माध्यम से।***
3. ***चरित्रों के माध्यम से।***

जैसा कि रेणु ने भूमिका में ही स्पष्ट कर दिया है कि ''यह है मैला आँचल एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया।'' रेणु इस पूर्णिया के माध्यम से समूचे हिन्दुस्तान की कथा कहते हैं। पूर्णिया की कथा हिन्दुस्तान से कैसे मिलती है और हिन्दुस्तान की कथा से मिलते हुए भी पूर्णिया कैसे सुरक्षित रहता है, इस द्वंद्व को बहुत ही बारीकी से मैला आँचल में प्रस्तुत किया गया है।

मेरीगंज पर आजादी का असर कैसे पड़ रहा है? मेरीगंज के लोग विज्ञान को कैसे देख रहे हैं? पहली बार रेडियो को देखकर बालदेव कहता है यह है रेडियो। इसमें देश-विदेश की खबर सुनिए। अगर आप मुँह धोकर नहीं आए हैं तो यह आपको बेवकूफ बोलेगा। इसी तरह, राजनीतिक पार्टियाँ किस प्रकार गांव की भोली-भाली जनता को अपने चंगुल में फंसा रही है, ये सारी बातें मेरीगंज के अलावा हिन्दुस्तान के किसी भी गांव में सटीक बैठती है। वहीं दूसरी ओर, रेणु पूर्णिया और पूर्णिया अंचल के तमाम रस्मों-रिवाज, लोक मान्यताओं, लोगों की जुबान इत्यादि को सुरक्षित रखते हुए पूर्णिया को अमर कर देते हैं।

मैला आँचल में जो कथानक है वह अंतर्द्वंद्वों से भरा हुआ है। एक तरफ आजादी का क्षणिक उत्साह है वहीं दूसरी ओर मरे हुए सपनों का घोर संत्रास । एक तरफ जमींदारों का वर्ग है जो अपनी तमाम चालाकियों से अपनी जमीन को बचाने में लगे हुए हैं और इसमें सफल भी हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर कालीचरण के नेतृत्व में निचली जातियों या पिछड़ी जातियों की सुगबुगाहट भी है। बरसों से चली आ रही परंपरा टूटने के कगार पर है लेकिन किसी नई व्यवस्था की स्पष्ट झलक नहीं दिखती।

मैला आँचल का कथानक समझने के लिए उसके चरित्रों को भी समझना अत्यंत आवश्यक है। सभी प्रमुख पात्र (बावन दास को छोड़कर) जीवन के द्वद्वों से गुजरते है। उपन्यास के प्रमुख पात्र बालदेव गांधीवादी हैं, वे स्वाधीनता आंदोलन में भाग ले चुके है और जेल भी जा चुके हैं। लेकिन उनका गांधीवाद बहुत जल्दी ही मजाक बन जाता है। उनका अनसन 'अन्ट-सन्ट में बदल जाता है। लक्ष्मी उन्हें एक आदर्शवादी युवक समझती है परंतु उनका आदर्शवाद परमिट और कोटा बांटने तक ही सीमित रह जाता है। उनपर ब्लैक मार्केटिंग का आरोप लगता है। अन्त में तो ईष्यावश वे बावनदास की सारी चिट्ठियां भी जलाने की कोशिश करते हैं और सोचते हैं कि वे अब चले जाएंगे अपने गांव, अपनी जाति के लोगों के पास। यह है एक आदर्शवादी-गांधीवादी युवक की परिणति वैसे, इसके लिए बलदेव उतने जिम्मेवार नहीं लगते जितनी की बदली हुई परिस्थितियां।

कालीचरण पिछड़ी जाति के एक प्रमुख नेता के रूप में उभरता है। कालीचरण के माध्यम से रेणु यह दिखाना चाहते थे कि समाज में परिवर्तन निचली जातियों के द्वारा ही संभव है। परंतु कालीचरण जिस पार्टी का प्रतिनिधित्व करता है। वह पार्टी भी और खुद कालीचरण भी कई विसंगतियों का शिकार है। सोसलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टियों में अपराधियों की घुसपैठ होती है। कालीचरण खुद कई जगह व्यक्तिगत और राजनीतिक स्वार्थों से घिरा हुआ दिखता है। दफा 40 की नोटिस आ गई है। कालीचरण को डर है कि कहीं सारे लोग कांग्रेस में न चले जाएं इसलिए दफा 40 के खारिज होने से वही अधिक खुश होता है।

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में डा. प्रशांत का भी नाम लिया जाता है। शायद रेणु मेरीगंज की धूल-धूसरित कथा से संतुष्ट नहीं हो पा रहे थे इसलिए डा. प्रशांत को ठीक वैसे ही कथा में शामिल करते हैं जैसे प्रेमचंद 'गोदान' में होरी की कथा कहते-कहते मेहता की कथा कहने लगते हैं। मेहता के माध्यम से वे

मध्यवर्ग को रास्ता भी दिखलाते हैं। डा. प्रशांत भी थोड़े-बहुत द्वंद्वों के बाद अपनी ऐतिहासिक भूमिका को पहचान लेते हैं।

डा. प्रशांत का रिसर्च अब पूरा होने वाला है। वे यह जान चुके हैं कि मेरीगंज की असली बीमारी मलेरिया और काला ज्वार नहीं है, बल्कि गरीबी और अशिक्षा है। इसकी कोई दवा डा. प्रशांत के पास नहीं है। इसीलिए उनका विश्वास थोड़ी देर के लिए कमजोर पड़ता है लेकिन अंत में जेल से छूटने के बाद वह वापस पटना नहीं जाते बल्कि मेरीगंज में ही रहने का निर्णय लेते हैं और मनुष्यता की सेवा करने की बात करते हैं। उनकी मित्र ममता कहती है- ''कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है, डाक्टर तुमने कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना। मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत छोटी बात नहीं।''

इस प्रकार, मैला आँचल की पूरी कथा जिस जीवन को लेकर प्रस्तुत है वह तमाम विसंगतियों और द्वंद्वों से भरा है। रेणु यह स्पष्ट बतला देना चाहते हैं कि राजनीतिक पाटियां सामाजिक परिवर्तन में कोई ऐतिहासिक या क्रांतिकारी भूमिका नहीं निभा सकती ये सबकी सब अवसरवादी है अगर कुछ परिवर्तन होने वाला है तो डा. प्रशांत जैसे सच्चे समाज सेवकों से ही।

मैला आँचल: आंचलिकता

रेणुजी का 'मैला आँचल' हिन्दी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की नींव रखता है। यद्यपि आँचलिक उपन्यासों की परम्परा बहुत पहले से चली आ रही है, बावजूद इसके इसे एक अलग और विशिष्ट पहचान देने का श्रेय रेणुजी को ही जाता है। आँचलिक उपन्यासों की परंपरा में 'मैला आँचल' एक ऐसी रचना है, जो आँचलिकता को मुख्यधारा में जोड़ने के साथ-साथ उसके मानदण्ड भी निश्चित करता है।

उल्लेखनीय है कि आँचलिकता मात्र एक शिल्प नहीं है, बल्कि एक दृष्टि है जो बगैर किसी पूर्वाग्रह के जीवन को देखने और समझने का प्रयास करती है। मैला आँचल भी उसी सहज और सामान्य जीवन का एक 'अलबम' है जिसमें एक अंचल विशेष (पूर्णिया) के तमाम चित्रों को देखा जा सकता है। आँचलिकता, सामाजिक जीवन से साक्षात्कार की एक ऐसी विधि है जिसमें जीवन ही रचना का कथ्य बन जाता है। चूँकि जीवन रचनाशीलता को प्रभावित करता है, इसलिए आँचलिक उपन्यासों की शिल्प- विधि अनियंत्रित, अराजक एवं बिखरी हुई होती है। इसमें रचनाकार घटनाओं का चुनाव नहीं करता बल्कि जीवन को उसकी संपूर्णता में देखता है।

आँचलिक उपन्यास में लोक जीवन अभिव्यक्त होता है इसलिए वहां कथा शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति के दायरे में नहीं बँधती बल्कि वह विश्वासों, संस्कारों और रीति-रिवाजों को लेकर चलती है। आँचलिक उपन्यास की एक पहचान उसमें नायकत्व की अनुपस्थिति से भी होती है। यहाँ कोई एक नहीं बल्कि पूरा का पूरा अँचल नायक होता है। यद्यपि नायक का लोप प्रेमचंद्र के उपन्यासों से ही दिखने लगता है, किन्तु रेणु के यहाँ तो नायक कथा से पूर्णतः निष्काषित है और उसके स्थान पर सामान्य पात्र केन्द्र में आ जाते हैं।

उपन्यास में अंचल के नायकत्व की ओर संकेत करते हुए रेणुजी लिखते हैं- ''कथानक है पूर्णिया-------मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गांव को पिछड़े गांवों का प्रतीक मानकर उपन्यास-कथा का क्षेत्र बनाया है।'' जाहिर है कि यहां मेरीगंज को कथा के केन्द्र में रखकर रेणुजी पिछड़े गांव, पिछड़े वर्ग और जिन्दगी के दौड़ में पिछड़ गए लोगों को खींचकर सामने लाते हैं। वस्तुतः उनका यह प्रयास ही इस उपन्यास की बड़ी उपलब्धि है।

मैला आँचल पूरी तरह से मेरीगंज तक सीमित है। यह उसकी चारदीवारी को कभी पार नहीं करता और यदि कभी करता भी है तो ठीक उसी तरह जैसे सुबह गाँव से शहर जाने वाला व्यक्ति शाम होते-होते गाँव लौट आता है। यहाँ भी सब कुछ मेरीगंज में ही घटित होता है और सभी पात्र भी यहीं के हैं। यहाँ कोई एक पात्र प्रमुख नहीं है और लगभग आधा दर्जन पात्र प्रमुखता पाते भी हैं तो भी वे सभी मिलकर मैला आँचल की पूरी कहानी का प्रतिनिधित्व नहीं करते। मेरीगंज सब पर हावी है और रेणुजी ने किसी भी पात्र को मेरीगंज से बड़ा नही बनने दिया है।

नायक की तरह ही 'मैला आँचल' का नामकरण भी कुछ अलग है, जिसके जरिए समस्त कथा की बाह्य एवं आंतरिक रेखाएं खींचीं गई हैं। रेणुजी ने मेरीगंज की विशिष्ट पहचान कराने वाले सभी पक्षों को चित्रित किया है। वह इस क्षेत्र के भूगोल, परिवेश, यहाँ के निवासियों और उनके बीच के

संबंधों, जातियों के समीकरण तथा राजनीतिक हलचलों आदि सभी का परिचय देते हैं।

मैला आँचल में अंचल को ही नायक बनाने के सृजनात्मक प्रयास में वह इसके सभी पहलुओं को छूते नजर आते हैं। इसकी कथा उस अंचल की संस्कृति, परंपराओं, विश्वासों, रीति-रिवाजों, लोकगीतों आदि सभी का समुच्चय है और यही वजह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी घटनाओं को इसमें देखा जा सकता है।

आंचलिकता अपनी रूढ़ियों, अंधविश्वासों और मान्यताओं को भी लिए चलती है। रेणुजी ने उपन्यास में इन सब का चित्रण करते हुए यह दिखाया है कि समाज के पुराने जड़ विश्वासों के भीतर ही नई चेतना का उदय भी हो रहा है। गांव में नई राजनीति का प्रवेश हो चुका है, किन्तु यहां अभी भी दलगत और जातीय राजनीति हावी है। फलतः इस नई राजनीति से अंचल के लोग बहुत अधिक प्रभावित नहीं हैं और शायद इसीलिए बावनदास, बालदेव जी, कालीचरन आदि चरित्र इतने जीवंत चरित्र बनकर उभरते हैं।

इस उपन्यास में मेरीगंज एक ऐसा गांव है जहां के मठ में यदि निर्गुणवाणी की प्रभाती गायी जाती है तो खलासी जी सारंगा-सदाब्रिज की कथा सुनाकर गाँव का मनोरंजन करते हैं और गाड़ी हाँकते हुए गाड़ीवान 'भड़जिया' के गीत गाते हैं। बारिश न होने पर औरतें 'जाट-जाटिन' का खेल खेलती हैं- 'सुन री हमार जटनियाँ, हो बाबू जी।' इसी तरह आजादी के दौर में अनपढ़ किसानों द्वारा रचे हुए गीत सभी जगह गाए जाते हैं- 'खादी के चुनरिया रंग दे छापेदार रंगरेजवा।' इस प्रकार, अंचल की पूरी जिन्दगी अभावग्रस्त होने के बावजूद भी गीतों से गूंजती है।

उपन्यास के शिल्प में लोकगीत का प्रयोग रेणु की अपनी खोज है, जो आंचलिक उपन्यास की एक महत्त्वपूर्ण पहचान हो सकती है। इसी तरह खान-पान, पशु-पक्षी (सिंसर, खिकसियारी, खस्सी), वाद्ययंत्र (खंजरी, ढांक, मांदल) आदि का भी विस्तृत उल्लेख किया है।

मैला आँचल की आंचलिकता का जो सबसे प्रभावशाली पक्ष है, वह है-उसकी भाषिक संरचना। यद्यपि इसे पढ़ने और समझने में कई बार पाठकों को कठिनाई भी होती है, क्योंकि इसमें आँचलिक शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। किन्तु यह पात्र और परिवेश के सर्वथा अनुकूल है। यह परिस्थितियों के मिजाज में धुली-मिली एक ऐसी भाषा है जो आंचलिक जीवन का जीवन्त दस्तावेज बन गयी है। मसलन- ***'खद्दर पहनता है---जैहिन्न बोलता है----भारथमाथा की जै----गान्ही का यह रास्ता नहीं।'*** इस भाषा की प्रतिक्रिया में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह भी द्रष्टव्य है- 'सचमुच गियानी आदमी है बालदेव जी।'

यहां उपमानों का चुनाव और मुहावरों का प्रयोग भी रेणु उसी परिवेश में रहकर करते हैं- ***'रात में रोने का कारण पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर देखने लगती थी। ठीक बाछी की तरह जैसे उसकी माँ मर गई हो।'*** यहाँ अधिकाधिक पात्र मैथिली, मगही और भोजपुरी के मिले-जुले शब्दों का प्रयोग करते हैं। ये व्याकरण के नियमों से कोसों दूर है और इसीलिए शब्दों को अपने उच्चारण के अनुरूप ढ़ाल लेते हैं, जैसे- ***'डागडर बाबू' 'इसपिताल', 'डिस्टीबोड', 'भैंसचरमनबाबू', 'टिशन', 'मुरती' आदि।*** इसमें अनेक शब्द ऐसे हैं जो अनेक हिन्दी पाठकों के लिए भी अबोधगम्य हैं। कुछ विद्वानों ने इसकी भाषा को लेकर आपत्ति भी जाहिर की है, किन्तु इस उपन्यास की सफलता ऐसे सभी आरोपों को खारिज कर देती है।

मैला आँचल वस्तुतः एक फिल्म जैसा उपन्यास है जिसके पार्श्व संगीत में मादल और ढ़ोल तथा लोकगीतों के स्वर भी निरंतर सुनाई पड़ते हैं। यहाँ एक दृश्य बनता है और मिट जाता है। कोई दृश्य सूत्रबद्धता लेकर नहीं आता है, किन्तु यह बिखराव उपन्यास की कमजोरी नहीं बल्कि उसका वैशिष्ट्य है। समग्रतः 'मैला आँचल' प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास परम्परा की एक ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है जो रचना और जीवन के संबंध को नए ढ़ंग से परिभाषित करता है। यह उपन्यास न केवल आँचलिकता का सूत्रपात करता है बल्कि उसके प्रतिमान भी निर्धारित करता है।

मैला आँचल: उपन्यास का राष्ट्रीय संदर्भ

मैला आँचल एक विशुद्ध आँचलिक उपन्यास है जिससे सही अर्थ में आँचलिक उपन्यासों की परंपरा की शुरूआत होती है। चूंकि इसमें आँचलिकता का रंग बहुत गहरा और चटख है, अतः इस उपन्यास का मूल्यांकन भी इसी संदर्भ में हुआ है। किन्तु इसे केवल एक आँचलिक उपन्यास मान लेना इसमें

गूंजते राष्ट्रीय राजनैतिक स्वर को अनसुना करने जैसा है। वस्तुतः इसका एक राजनैतिक फलक भी है जो कथा और पात्रों से सीधे रूप में जुड़ता है।

रेणुजी राजनीति से होकर साहित्य की दुनिया में आए थे। अतः उनमें राजनीतिक अन्तर्विरोधों और उसकी गतिविधियों की एक गहरी समझ थी। आजादी के पूर्व और बाद के भारत से वे भली-भांति परिचित थे। वे बदलती भारतीय राजनीति तथा गिरते मूल्यों को अपने सामने देख रहे थे। संभवतः यही वजह है कि वे राजनीति से विवश होकर साहित्य में प्रवेश करते हैं और अपनी रचनाओं में अपने समय एवं समाज की गहरी पड़ताल करते हैं।

आलोचक नलिन विलोचन शर्मा ने लिखा है कि ***'मैला आँचल व्यक्ति और समूहों का एक द्वन्द्वात्मक आख्यान है।'*** उपन्यास के कथ्य पर विचार करते हुए डॉ- देवराज कहते हैं कि ***'यह उपन्यास आँचलिक है, राष्ट्रीय है या सार्वभौमिक या फिर तीनों का एक्य है, कहना बड़ा मुश्किल है।'*** निःसंदेह, मैला आँचल को पढ़ते हुए जहां हम जनपदीय जीवन में खो जाते हैं वहीं बीच-बीच में राष्ट्रीय राजनीति से जुड़े हुए यथार्थ हमें चौकन्ना कर देते हैं। रेणुजी इस उपन्यास में सिर्फ ग्रामीण जीवन का ही प्रमाणिक चित्रण नहीं करते बल्कि उन राजनीतिक गतिविधियों और मूल्यों को भी उद्घाटित करते हैं जिससे उनकी आँचलिकता प्रभावित होती है। उनकी राजनीतिक दृष्टि उपन्यास को आँचलिकता के दायरे से बाहर निकालकर उसे एक बड़े परिप्रेक्ष्य से जोड़ देती है।

'मैला आँचल' में एक मानवतावादी जीवन-दृष्टि भी है। वस्तुतः इस जीवन-दृष्टि के जरिए ही इस उपन्यास के मर्म को समझा जा सकता है। रेणुजी लिखते हैं- ***''डॉ- का रिसर्च पूरा हो गया, एकदम कंपलीट। डॉ. ने इस रोग की जड़ पकड़ ली------- गरीबी और जहालत-इस रोग के दो कीटाणु है।''*** वस्तुतः डॉ- प्रशान्त की रिसर्च पूरी नहीं हुई है किन्तु उसने वह जमीन तलाश ली है जिस पर सामाजिक परिवर्तन की चिंता से उत्पन्न एक मजबूत सामाजिक दर्शन की नींव रखी जा सकती है। यही वह जीवन-दृष्टि है जिसे लेकर रेणुजी उपन्यास में आगे बढ़ते हैं।

'मैला आँचल' का मेरीगंज सिर्फ एक गाँव नहीं है बल्कि वह राष्ट्रीय राजनीति की एक प्रयोगशाला भी है। इस गांव में रेणुजी ने तत्कालीन सभी पार्टियों के प्रतिनिधियों को रखा है जिनके माध्यम से उन पार्टियों की वास्तविकता खुलकर सामने आ जाती है। चूंकि रेणुजी ने स्वयं सभी पार्टियों को आजमाया था, अतः वे इनकी वास्तविकता से परिचित थे। यही वजह है कि वे बावनदास के शब्दों में कहते हैं- ***'सब पार्टी समान।'*** राजनीतिक पार्टियों के प्रति उपजी यह निराशा बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक है जो आज की भी सच्चाई है।

राजनीति में जब पतन की प्रक्रिया शुरू होती है तो यह सभी जगह समान रूप में दिखती है। बावनदास की बलि वस्तुतः उन राजनीतिक मूल्यों की बलि है जिसका स्वप्न कभी गाँधीजी ने आजाद भारत के लिए देखा था। उपन्यास में जिन राजनैतिक विषयों को लेकर हलचल दिखाई पड़ती है वह ग्रामीण समाज की संवेदनाओं पर व्यापक प्रभाव छोड़ता है।

मैला आँचल में भी जो वैचारिक राजनीति है वह जीवन की पृष्ठभूमि के रूप में आती है। मसलन, गांव की राजनीति का आधार जाति है और जातिगत आधार पर ही लोग पार्टियों के सदस्य बनते हैं। हरगौरी सिंह निचली जाति के नेता बालदेव को स्वीकार नहीं करता और इसीलिए उसका अपमान करते हुए वह कहता है- ***'आप तो लीडर ही हो गए, आजकल कांग्रेस ऑफिस का चौका-बर्तन कौन करता है?'***

इस गांव के विभिन्न टोलों में जो विवाद है वह भी जातिवाद के कारण ही है। इसीलिए गांव का मलेरिया सेंटर भी राजनीति का शिकार हो जाता है, भले ही उसका उद्देश्य सामाजिक हो। दूसरी बात, यहां के लोग राजनीतिक मुद्दे को भी स्वार्थ के नजरिए से देखते हैं या फिर उसको महत्व नहीं देते।

उपन्यास में विभिन्न राजनैतिक दलों, विचारधाराओं, संगठनों, संस्थानों आदि का यथास्थान उल्लेख हुआ है। यहां उनके विचारों की टकराहट भी कई बार खुलकर सामने आती है, किन्तु रेणुजी किसी भी विचारधारा से न तो जुड़ते हैं और न हीं उसे किसी पर हावी होने देते हैं। यहाँ मुख्य रूप से तीन राजनैतिक कोण उभरते हैं- वामपंथी, कांग्रेसी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ। इन तीनों पार्टियों का प्रभाव गाँव के विभिन्न चरित्रों पर देखा जा सकता है। डॉ. प्रशान्त, कालीचरण और चरित्तर कर्मकार पर वामपंथी विचार का प्रभाव है। कालीचरण का जो विद्रोही चरित्र है वह भूमि-संघर्ष के दौरान उभरा है।

चरित्तर कर्मकार वैचारिक स्तर पर डॉ. प्रशान्त और कालीचरण से बिल्कुल मिलता है किन्तु उसकी कार्य-प्रणाली भिन्न है। वह बम और बन्दूक की राजनीति में विश्वास रखता है। चरित्तर समझता है कि वामपंथी पार्टियों का नेतृत्व भी बुर्जुआ वर्ग के हाथ में ही है, इसलिए इनसे शोषितों का भला नहीं हो सकता। पार्टी से मोहभंग के बाद कालीचरण का चरित्तर कर्मकार के पास जाना यह भी संकेत करता है कि पीड़ितों की पीड़ा का समाधान अब उग्रवाद में ही है।

रेणुजी ने बालदेव के चरित्र में जिस अधकचरे, अपरिपक्व और पाखण्डी रूप को रखा है उससे यह जाहिर है कि वे गाँधीवाद का जो बनावटी रूप है उसका खुलासा करना चाहते हैं। बालदेव के अनशन को गाँव की जनता यूँ ही 'अन्टशन्ट' नहीं कहती। इसी तरह, तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद का ह्दय परिवर्तन और भूमिदान गाँधीवादी परिणति है, यह गले से नहीं उतरता। वस्तुतः इसमें भी उनका अपना निहित स्वार्थ है। गाँधीवादी मूल्यों का अंत तथा बावनदास की मृत्यु, गाँधी के शारीरिक और वैचारिक दोनों रूपों की हत्या है।

'मैला आँचल' भारतीय राजनीति का वह परिवर्तन-बिंदु है जहाँ से राष्ट्रीय राजनीति में मूल्यों के ह्रास को देखा जा सकता है। बावनदास जैसे राष्ट्रवादी व्यक्ति ने यह कभी नहीं सोचा था कि आजादी के बाद देश की स्थिति ऐसी हो जाएगी। वस्तुतः आजादी के बाद कुछ भी तो नहीं बदला। किसानों का वैसा ही शोषण, वैसा ही भ्रष्टाचार, कानून के सिद्धान्त और व्यवहार में वैसा ही अन्तर अब भी बना हुआ है। बावनदास कहता भी है- *''भारथमाता अब भी जार-बेजार हो रही है।''* इसी तरह कालीचरण टूटते राजनीतिक मूल्यों के कारण ही अपमानित और पीड़ित होता है और डाकू तक घोषित कर दिया जाता है। किन्तु उसकी पार्टी उसके बचाव के लिए कुछ नहीं करती। बावनदास और कालीचरण जैसे लोगों के जीवन की यह विडम्बना है कि वे त्याग और सेवा के बावजूद अपना अभीष्ट सम्मान नहीं प्राप्त कर पाते।

'मैला आँचल' में डॉ- प्रशान्त का साम्यवाद की ओर झुकाव, कालीचरण और चलित्तर का उग्रवाद से जुड़ना, ग्रामीण युवकों का परिवर्तन के प्रति उत्साह, बावनदास की हत्या तथा बालदेव के चरित्र का उद्घाटन आदि घटनाओं से मेरीगंज में चल रही राजनैतिक गतिविधियों को ठीक से समझा जा सकता है। किन्तु बावजूद इसके, इन घटनाओं से गाँव की रचनात्मक शक्तियाँ निःशेष नहीं हो जातीं। रेणुजी ने इस उपन्यास में नवीन परिवर्तनकारी शक्तियो को तो पहचाना ही है, जनता की आशा को उससे जोड़ने का प्रयास भी किया है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि 'मैला आँचल' में रेणुजी ने जिन मुद्दों का उठाया है वे वस्तुतः स्वतंत्रता की दहलीज पर खड़े केवल मरीगंज नहीं बल्कि समूचे देश से जुड़े हैं। अतः इस उपन्यास का एक राष्ट्रीय राजनैतिक संदर्भ भी है जो आंतरिक समस्याओं के साथ घुल-मिल कर उद्घाटित हुआ है। मेरीगंज राजनैतिक हलचलों से अलग-थलग नहीं है बल्कि उसमें परिवर्तन के संकेतों को देखा जा सकता है।

गोदान और मैला आँचलः एक तुलना

प्रेमचंद का 'गोदान' और रेणु का 'मैला आँचल' हिन्दी उपन्यास परंपरा की दो महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। भारतीय उपन्यास की अपनी खास स्वायत्त पहचान निर्धारित करने में जिन उपन्यासों की महत्वपूर्ण भूमिका है, उनमें ये दोनों अन्यतम हैं। ये दोनों रचनाएं न केवल अपने समय और समाज से टकराती और उन्हें व्यक्त करती हैं, बल्कि इनमें आने वाले युग की भी सूचना मिलती है। इस अर्थ में ये दोनों रचनाएं कालजयी हैं।

'गोदान' और 'मैला ऑचल' में जहाँ तक समानता-असमानता का प्रश्न है, तो यहाँ असमानता के बावजूद समानता के कई बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है। सबसे पहली बात तो यह है कि गोदान यदि प्रेमंचद का अन्तिम उपन्यास है तो मैला आँचल रेणु का पहला उपन्यास। दूसरी बात, मैला आँचल की पहचान एक आँचलिक उपन्यास के रूप में अधिक है। यद्यपि गोदान में भी अवध क्षेत्र के लोकजीवन और लोक संस्कृति को देखा जा सकता है तथा यहाँ भी राष्ट्रीय समस्याओं की झलक मिलती है, किन्तु मैला आँचल में चूंकि आँचलिकता हावी है इसलिए यह गोदान से अलग है। इसी तरह, 'गोदान' का बेलारी गाँव या लखनऊ शहर देश के किसी भी हिस्से का गांव और शहर हो सकता है परन्तु 'मैला आँचल' का मेरीगंज अपनी जनपदीय वैशिष्ट्य के कारण अपना एक अलग पहचान रखता है। अतः कई मामलों में दोनों का अन्तर स्पष्ट है।

यदि इन दोनों को समानता के दृष्टिकोण से देखा जाए तो 'गोदान' और 'मैला आँचल' दोनों में वर्ग-संघर्ष, कृषक उत्पीड़न, सामाजिक वैषम्य, अलाभकर खेती, किसानों का पलायन आदि का समान रूप से चित्रण हुआ है। किसानी जीवन की त्रासदी को चित्रित करता हुआ मैला आँचल इस दृष्टिकोण से गोदान की परम्परा का ही उपन्यास बन जाता है। दोनों में व्यक्ति और समाज एक-दूसरे से हस्तक्षेप करते हुए चलते हैं।

इन दोनों कालजयी उपन्यासों में कुछ पात्र विशेष की अजीब समानता है। यद्यपि मैला आँचल में कोई पात्र नायक बनकर नहीं उभरता किन्तु इसका एक प्रमुख पात्र 'बावनदास' गोदान के नायक 'होरी' के बहुत करीब है। ये दोनों यद्यपि अनपढ़ और अशिक्षित हैं किन्तु बावजूद इसके जीवन की तमाम परिस्थितियों से गुजरते हुए भी नैतिकता और आदर्श का दामन नहीं छोड़ते। दोनों में गहरी संवेदना है तथा ये दोनों नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए अंत तक संघर्ष करते हैं। किन्तु इसके साथ ही होरी और बावनदास की त्रासदीपूर्ण मृत्यु यह सिद्ध कर देती है कि मानवीय मूल्यों को बचाए रखना अब बहुत कठिन है। बदलते समाज में नैतिकता और आदर्श कितने बेमानी और बेअसर हो गए हैं, यह इन दोनों की मृत्यु से प्रमाणित हो जाता है। शायद यही वजह है कि इनकी मृत्यु पाठक के मन में जितना दुःख नहीं उत्पन्न करती उससे कहीं अधिक आक्रोश और विद्रोह पैदा करती है।

'गोदान' में मिस मालती और 'मैला आंचल' में डॉ. ममता में न केवल पेशागत समानता है बल्कि उनकी सोच और दृष्टिकोण भी समान है। यद्यपि मिस मालती शुरू में अभिजात्य सोच से प्रभावित हैं और इसीलिए वे डाक्टरी जैसे सेवाभाव के कार्य को भी पैसा कमाने का जरिया मानती हैं, किन्तु बाद में प्रो- मेहता के विचारों से प्रभावित होकर सामाजिक कार्यों में सक्रिय हो जाती हैं। अब वे महिला-जागरण और गरीबों की सेवा में रूचि दिखाती हैं। इस दृष्टि से डॉ. ममता शुरू से ही मध्यवर्गीय आदर्श और दायित्व से परिचित हैं और इसीलिए वे डॉ. प्रशान्त की प्रेरणा-स्त्रेत बनी रहती हैं।

दोनों उपन्यासों के पात्र- प्रो.मेहता और डॉ. प्रशान्त में भी वैचारिक स्तर पर समानता है। दोनों मध्यवर्गीय उत्तरदायित्व को अधिक तरजीह देते हैं। यद्यपि दोनों चरित्र सैद्धान्तिक ज्यादा हैं किन्तु जहां प्रो. मेहता के विचारों का प्रभाव गोबर की नयी पीढ़ी पर देखा जा सकता है वहीं डॉ. प्रशान्त का व्यावहारिक रूप कालीचरण में दिखता है। गोबर और कालीचरण वस्तुतः कर्मवादी चरित्र हैं, जो सिद्धान्त को व्यावहारिकता का जामा पहनाते हैं।

'गोदान' और 'मैला आँचल' दोनों की एक ग्रामीण पृष्ठभूमि है और इसलिए दोनों की समस्याएं भी प्रायः समान हैं। दोनों उपन्यासों के विभिन्न चरित्र भी लगभग समान हैं, जो अपनी-अपनी चारित्रिक विशिष्टताओं और दुर्बलताओं के साथ उपन्यास में मौजूद हैं। मसलन, गोदान के जमींदार रायसाहब उसी शोषणवादी व्यवस्था के प्रतीक हैं जिस व्यवस्था के प्रतीक मैला आंचल के तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद हैं। दोनों में सहानुभूति कम और शोषणवादी मानसिकता अधिक है।

शोषण के कारण ही किसान खेती से अलग होकर अब शहरों की ओर पयालन कर रहे हैं। जिस तरह अलाभकर खेती के कारण गोबर और जंगी गांव छोड़कर शहर जाते हैं और वहां औद्योगिक सर्वहारा बनने के लिए विवश हो जाते हैं ठीक उसी तरह मैला आंचल में भी किसानों का शहरों की ओर पलायन दिखाई पड़ता है। यहां गांव का एक मजदूर कहता है- ***''चलो-चलो, कटिहार चलो, यहां क्या रखा है।''***

दोनों जगह ग्रामीण समाज में बिखराव समान है। इस तरह, दोनों उपन्यासों में व्यक्ति-चरित्र और वर्ग-चरित्र का द्वन्द्व उभरा है। किन्तु, गोदान में जहाँ प्रेमचंद व्यक्ति-चरित्र को वर्ग-चरित्र में तब्दील कर देते हैं वहीं मैला आँचल में रेणुजी ने वर्ग-चरित्र पर व्यक्ति-चरित्र को हावी दिखाया है।

शिल्प के दृष्टिकोण से भी दोनों उपन्यासों में कई समानताएं हैं। गोदान में गांव कथा और शहरी कथा को लेकर जहाँ एक समानान्तर शिल्प योजना दिखाई पड़ती है वहीं मैला आंचल में भी कथा आजादी-पूर्व और आजादी बाद, दो खण्डों में विभाजित है अर्थात् दोनों उपन्यासों की शैली उपन्यास की संरचना को द्विखण्डीय (दो खंड) बनाती है। इसी तरह गोदान की कथा में कई अलग-अलग चित्र उभरते हैं तो मैला आंचल भी भिन्न-भिन्न दृश्यों का एक 'एलबम' है। रेणुजी अंचल विशेष का एक बड़ा परिदृश्य तैयार करते हैं और उसी में सारे असंबद्ध चित्रों को समाहित कर देते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से दोनों उपन्यासों का महत्व इसलिए अधिक है कि प्रेमचंद का 'गोदान' कथा-विस्तार के जिस बिंदु पर जाकर ठहर जाता है, रेणुजी का 'मैला आंचल' वहीं से प्रारंभ होता है। गोदान यदि आजादी के पहले के भारत का चित्र है तो मैला आंचल आजादी-पूर्व और बाद का भारत है। दोनों उपन्यासों में कथा, पात्र-स्थितियां, भविष्य में बदलाव के संकेत आदि कई बिन्दुओं पर समानताएं हैं। इसी तरह, दोनों का शिल्प भी द्विखण्डीय होकर एक बड़ा फलक निर्मित करता है और पाठक पर अपना समान प्रभाव छोड़ता है।

मैला आँचल: उपन्यास की भाषा

उपन्यासकार भाषा के सर्जनात्मक प्रयोग से ही अपने कथा-संसार और 'विजन' का बिम्ब खड़ा करता है। उपन्यास के विषय, शिल्प और उसकी भाषा में गहरा संबंध होता है। वस्तुतः इन तीनों की एकरूपता एवं पारस्परिकता ही उसे एक श्रेष्ठ कृति के रूप में प्रतिष्ठित करती है। इस दृष्टि से 'मैला आँचल' की भाषा भी अपने पात्र और परिवेश के अनुकूल है जो पाठक तक कथा के मर्म को पहुंचाने में अपनी सार्थकता सिद्ध करती है।

'मैला आँचल' में रेणुजी का उद्देश्य एक पिछड़े अंचल के बहुमुखी यथार्थ को चित्रित करने के साथ ही तत्कालीन समाज और राजनीतिक परिवेश में होने वाले बदलावों की ओर संकेत करना है। इसके लिए रेणुजी ने जो कथा-संसार निर्मित किया है उसमें कई और विविध पात्र हैं, इसीलिए उपन्यास की भाषा भी पात्रों की मानसिकता, उनकी सोच एवं सांस्कृतिक जीवन के अनुरूप वैविध्यपूर्ण है। वस्तुतः इस वैविध्य की सृष्टि ही उपन्यास को चित्रात्मक बना देती है।

'मैला आँचल' के कथा-संसार से गुजरते हुए जो एक खास बात दिखाई पड़ती है, वह है-पाठक का उपन्यासकार के साथ निरन्तर साहचर्य का बना रहना। लेकिन यहां उपन्यासकार कभी-कभी पाठक को पात्रों के साथ छोड़कर स्वयं नेपथ्य में चला जाता है और इसीलिए कई बार पात्रों का पाठक से सीधा संवाद बन जाता है। वैसे, वह आद्यन्त पाठकों के साथ ही बना रहता है और जरूरत पड़ते ही कथा प्रस्तुत करने के लिए स्वयं उपस्थित हो जाता है।

उल्लेखनीय है कि कथा में रेणुजी सर्वत्र एक ही भाषा का इस्तेमाल नहीं करते बल्कि कथा-प्रसंग और पात्रों के अनुरूप भाषा के रूप को भी बदल देते हैं। यही वजह है कि मैला आँचल में वे एक ही साथ तत्सम, तद्भव और आंचलिक शब्दों के प्रयोग के जरिए एक ऐसा मोहक संसार रचते हैं जिसमें पाठक डूबता चला जाता है।

आंचलिकता को बनाए रखने के लिए रेणुजी कई बार अपनी काव्यात्मकता का परिचय देना भी नहीं भूलते। जैसे- ***''मैला आँचल! लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचल है! गेहूं की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गांव के लोग खेतों में हैं, मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गांव के लोग क्रीड़ा कर रहे है।''*** यह डॉ. प्रशान्त का कथन है जिसके जरिए रेणुजी ने बड़े ही कुशलता से प्रकृति के साथ पाठक को जोड़ दिया । किन्तु यह प्रकृति मात्र वही नहीं है जो उपन्यासकार की चेतना में है, बल्कि यह डॉ- प्रशान्त के मन-मस्तिष्क पर अंकित प्रकृति भी है जिसे अब वह अपना बना चुके हैं।

रेणुजी ने आंचलिक जीवन को बहुत करीब से देखा और महसूस किया है और यही वजह है कि कई बार अशिक्षित ग्रामीण पात्रों के साथ जुड़कर वे भी गांव-गंवई के टूटे-फूटे एवं भदेस शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इसके जरिए वे आसानी से सामान्य पात्रों के साथ एकाकार हो जाते हैं। यहां शब्दों का उच्चारण भी आंचलिक बोलियों में घुल-मिलकर हुआ है, जैसे- ***''आचारज गुरू कासी जी से आए हैं। सभी मठ के जमींदार हैं, आचारज गुरू। साथ में तीस मुरती आए हैं- भंडारी, अधिकारी, सेवक, खवास, चिलमची, अमीन, मुंशी और गवैया। साधुओं के दल में एक नागा साधु भी है।''***

कथा को एकरसता से बचाने के लिए रेणुजी बीच-बीच में बहुत कुशलतापूर्वक कथा-सूत्र किसी पात्र को पकड़ा देते हैं और खुद पीछे हट जाते हैं। ऐसी स्थिति में भाषा स्वमेव उस पात्र के अनुरूप बदल जाती है। जैसे, राजा भूपति सिंह और जमींदार भोलाबाबू की कहानी सुनाने का दायित्व तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद को सौंप देते हैं जो सीधे-सीधे अपनी भाषा में पाठकों से जुड़ते चले जाते हैं।

औपन्यासिक संसार में नरेटर से अधिक महत्वपूर्ण भूमिका उन पात्रों की होती है, जो वस्तुतः कथा संसार के अभिन्न अंग होते है। यों तो 'मैला आँचल' में बहुसंख्यक आबादी अनपढ़ ग्रामीण किसान और मजदूर पात्रों की है, पर वैसे पात्र भी पर्याप्त हैं, जो उच्च वर्ग से संबंधित हैं तथा कम या ज्यादा पढ़े-लिखे हैं। ऐसे पात्रों में डॉक्टर, नेता, जमींदार, पुलिस पदाधिकारी आदि हैं।

'मैला आँचल' में जिस क्षेत्र का जीवन प्रस्तुत किया गया है, वहाँ के बहुसंख्यक लोग मैथिली बोलते हैं। भोजपुरी और मगही क्षेत्रों से गए लोग जिनकी संख्या नगण्य है, भोजपुरी और मगही बोलते हैं। निश्चित रूप से गांव का यह वर्ग परिनिष्ठित हिन्दी बोलना नहीं जानता। रेणुजी ने परस्पर विरोधी पात्रों में समन्वय स्थापित करने के लिए अनपढ़ ग्रामीणों से भी परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग कराया है, पर उन्हें छोटी-मोटी व्याकरणिक भूलें करने और मनमाने शब्दों का प्रयोग करने की छूट दे दी है। केवल चार-पाँच स्थानों पर ग्रामीण पात्र मैथिली, भोजपुरी और मगही में दो-एक छोटे-छोटे वाक्य बोलते हैं।

रेणु ग्रामीण पात्रों द्वारा अपभ्रष्ट शब्दों के प्रयोग में उनकी शैक्षिक और सामाजिक पृष्टभूमि का ध्यान रखते हैं। जो ग्रामीण पात्र बौद्धिक, शैक्षिक और सामाजिक दृष्टि से अधिक पिछड़े हैं, उनमें शब्दों के अपभ्रष्टीकरण की प्रवृति अधिक है। उदाहरण के लिए यादव टोला के लोगों की भाषा देखी जा सकती है- ***''हुजूर यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है। इस गांव का नहीं, चन्नपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खद्दड़ पहनता है और जैहिन्न बोलता है।''***

मेरीगंज में कुछ ऐसे भी अनपढ़ ग्रामीण पात्र हैं जिनका बौद्धिक और सामाजिक स्तर शेष पात्रों से थोड़ा ऊपर है। ऐसे पात्रों में तीन प्रमुख हैं- बालदेव, बावनदास और कालीचरण। ये तीनों ही निरक्षर हैं, पर राजनीतिक सम्पर्क में रहने के कारण इनकी भाषा में बुद्धि-विवेक झलकती हैं। इसमें बावनदास की तुलना में बालदेव और कालीचरण की भाषा में अपभ्रष्टीकरण की प्रवृति अधिक है। बालदेव कहता है-***''पियारे भाईयों कोठारिन साहेब जितना बात बोली, सब ठीक है। लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं------हम कोई विद्वान नहीं, सास्तर पुरान नहीं पढ़े हैं।''***

मेरीगंज में कबीर पंथियों का एक मठ है जिसके महंत और साधु एक प्रकार की सधुक्कड़ी भाषा बोलते हैं। इन साधुओं की भाषा भी अपभ्रष्ट शब्दों से भरी हुई है पर यहाँ भी रेणुजी वैविध्य की सृष्टि करने की सर्तकता बरतते हैं। मठ के सबसे ज्ञानी संत महंत सेवादास हैं। उनकी भाषा उल्लेखनीय है- ***''आज मध्यरात्रि में, सतगुरू साहेब सपने में मेरे आसान के पास आए। हम जल्दी से उठके साहेब बन्दगी किया। हमको दया भाव देके साहेब कहिन, सेवादास तुम नेत्रहीन हो, लेकिन तुम्हारे अन्तर के नैनो का जोत बड़ा विलच्छन है।''***

रेणु जी राजनीतिक चेतना से सम्पन्न रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से राजनीति के यथार्थ और उसके बदलते स्वरूप को भी अभिव्यक्त किया है। सोसलिस्ट पार्टी के नेता कामरेड सैनिक जी अपने भाषण में उर्दू शब्दों का कुछ अधिक प्रयोग करते हैं। वे कहते हैं- *''जिस तरह सूरज का डूबना एक महान सच है, पूंजीवाद का नाश होना उतना ही सच है। मिलों की चिमनियाँ आग उगलेंगी और उनपर मजूरों का कब्जा होगा, जमीनों पर किसानों का कब्जा होगा।''* यह राजनीतिक भाषणों की सुपरिचित शैली है जिसमें पर्यायवाचिता, आवृति, मुहावरों और बलाघातजन्य ध्वनियों का प्रयोग सामान्य है।

समग्रतः यह कहना उचित होगा कि भाषा का अनेक स्तरों पर वैविध्य 'मैला आँचल' की एक प्रमुख विशेषता है। इस भाषा-वैविध्य के कारण ही उपन्यास की विश्वसनीयता को न केवल पहचान मिलती है बल्कि यही उसकी लोकप्रियता का आधार भी है। वस्तुतः रेणुजी की भाषा में चित्रों को साकार ही नहीं बल्कि वाचाल कर देने की शक्ति है। 'मैला आँचल' की भाषा भी धरती के रूप, रस, गंध और यहाँ तक कि उसकी ध्वनि से भी मंडित होकर सामने आई है। आँचलिक भाषा के प्रयोग की दृष्टि से यह उपन्यास हिन्दी का पहला सफल उपन्यास है।

मैला आँचल का शिल्प

मैला आँचल को हिन्दी उपन्यास धारा में एक उपलब्धि के तौर पर देखा जाता है। 1954 में प्रकाशित मैला आँचल की भूमिका की चर्चा उपन्यास के पाठकों में काफी रही। रेणु ने भूमिका में ही लिखा 'यह है मैला आँचल एक आंचलिक

उपन्यास।' इसके बाद आंचलिकता को लेकर काफी बहसें हुई। आंचलिकता का स्वरूप खोजा जाने लगा। आंचलिक उपन्यासों की परंपरा में नागार्जुन, शिव पूजन सहाय इससे भी आगे चलकर मनन मिश्र जैसे लेखकों को नाम जोड़ा गया। परंतु आंचलिक उपन्यास के रूप में सर्वप्रथम रेणु ने ही इसे ख्यात किया।

आंचलिक रचना पारंपरिक रचनाओं से अलग इस मायने में होता है कि यहां पर नायक का पूरी तरह से निषेध होता है। उपन्यासों ने महाकाव्यों का कलेवर पाया परंतु उसके नायक की अवधारणा नहीं ली। नायक की उद्दात अवधारणा के खिलाफ प्रेमचंद ने होरी जैसे साधारण और सामान्य किसान को खड़ा किया तो रेणु मैला आँचल में किसी भी पात्र को इतना केन्द्रीय महत्व नहीं देते कि वह नायक बन सके। आंचलिकता के स्वरूप को निर्धारित करते हुए आलोचकों ने यह माना कि आंचलिक उपन्यास या रचना उसे कहेंगे जहां आँचल ही नायकत्व का दर्जा प्राप्त करें।

मैला आँचल में लगभग 250 पात्र हैं। लेकिन किसी पात्र को इतना महत्व नहीं दिया गया कि वह नायक बन सके। ये सभी पात्र मिलकर जिस आँचल का निर्माण करते हैं वह आँचल ही नायक है तथा रेणु उस आँचल को ही नायक मानकर कथा कह रहे हैं। यह आँचल अपनी तमाम अच्छाइयों और बुराइयों के साथ प्रस्तुत है जैसा कि रेणु घोषणा करते हैं-

''यह है मैला आँचल एक आंचलिक उपन्यास कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है-----इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी- मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। कथा की सारी अच्छाइयों और बुरायों के साथ साहित्य के दहलीज पर आ खड़ा हूं पता नहीं अच्छा किया या बुरा।''

रेणु ने अच्छा किया हो या बुरा इस पर तो अलग-अलग मत हो सकता है लेकिन इस पर सभी एक मत हैं कि कथा के क्षेत्र में उन्होंने शिल्प का एक नया मॉडल रखा।

मैला आँचल पर यह आरोप लगता रहा है कि उसमें कोई सुसंगत कथा नहीं है। इस आरोप में बहुत हद तक सत्यता भी है। कथा के सारे सूत्र धागे की तरह एक-दूसरे से उलझे हुए हैं। परंतु रेणु कोई एक सुसंगत कथा कहना भी नहीं चाहते थे। उन्होंने भारत के एक अति पिछड़े गांव मेरीगंज को सम्पूर्णता में देखता और इस मेरीगंज को प्रतीक बनाकर हिन्दुस्तान की सही तस्वीर को भी प्रस्तुत किया। जैसे गोदान सिर्फ होरी की कथा नहीं है बल्कि वह कथा संपूर्ण भारतीय छोटे किसानों की कथा हो जाती है वैसे ही मेरीगंज सिर्फ एक आँचल भर की कथा नहीं रह जाती। वह भारत के उस बड़े हिस्से जहां आबादी का लगभग 70% लोग रहते हैं, जिन्हें गांव कहा जाता है, उसकी कथा हो जाती है। जैसे हाड़ी के एक चावल से ही पता चल जाता है कि चावल की स्थिति क्या है वैसे ही मेरीगंज के माध्यम से कमोवेश भारतीय गांव का सच सामते आता है।

मैला आँचल में रेणु ने दो ढ़ाई वर्ष की कथा को शामिल किया है। 1946 ई० में मेरीगंज कैसा है। 15 अगस्त 1947 को देश को आजादी मिलती है। इस आजादी का कितना असर उस गांव पर पड़ता है? जनवरी 1948 में गांधी की हत्या होती है इसके लगभग तीन-चार महीने तक की कहानी इसमें संकलित है। इन दो-तीन वर्षों की समस्त गतिविधियों को रेणु ने मैला आँचल में रखा है।

उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि रचनाकार स्वयं उस गांव में स्थित है और पाठकों को भी उस गांव में ले जाकर खड़ा कर देता है। पाठक यह महसूस करता है कि वह बिना किसी बिचौलिये के अपनी आंखों से मेरीगंज की तमाम कुरूपता और सुंदरता को देख रहा है। इसमें दृश्य हैं, लोगों की बातचीत है, बीच-बीच में रचनाकार स्वयं उपस्थित होता है सब मिलकर एक डोकूमेंट्री सिनेमाई प्रभाव की सृजना करते हैं। यह मैला आँचल के बेजोड़ शिल्प से ही संभव है।

रेणु ने मैला आँचल पर परंपरागत शिल्प को छोड़कर एक नए शिल्प का इजाद किया। इस शिल्प में कथा की जगह जीवन ज्यादा महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि रेणु को इस आंचलिक उपन्यास की जरूरत पड़ी। जीवन को समग्रता से देखने के क्रम में जैसे हम जीवन के हर टुकड़े को विस्तार से देखते हैं, वैसे ही रेणु ने भारत के एक टुकड़े को ही अपनी कथा का विषय बनाया। दरअसल यह विखंडन समग्रता को ही पकड़ने की कोशिश है।

मैला आँचल में उपन्यास की सुपरिचित कथा प्रविधि भी देखने को मिलती है। इस प्रविधि में दृश्यात्मक और

परिदृश्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग होता रहा है। दृश्यात्मक प्रविधि में पाठक खुद अपनी आंखों से कथा दृश्यों को देखता है। परिदृश्यात्मक प्रविधि उसे कहते हैं। जहां कथा कथाकार, नैरेटर, किसी पात्र की मदद से कहानी को सुनता और समझता है। रेणु की विशेषता यह है कि उन्होंने इस दोनों विधियों का उपयोग इस कौशल के साथ किया है कि पाठक को यह पता ही नहीं चलता कि कब कथा दृश्यात्मक हो रही है और कब परिदृश्यात्मक।

उपन्यास की कथा शुरूआत ही होती है- ***''गांव में यह खबर तुरंत बिजली की तरह फैल गई- मिलिट्री ने बहरा चेथरू को गिरफ़ कर लिया है और लाल के कुंए से बाल्टी खोलकर ले गए हैं।''*** इस वाक्य के प्रथम खंड में पाठक कथाकार की उपस्थिति का बोध करता है, परंतु वाक्य के उतरार्ध में कथाकार की आवाज के स्थान पर अनपढ़ ग्रामीणों का स्वर गूंजता है। मिलिट्री और गिरफ़ शब्द किसी पढ़े-लिखे आदमी के नहीं हो सकते। उपरोक्त वाक्य में नाटकीयता की योजना इस कौशल से ही गई है की डिस्ट्रिक बोर्ड के कर्मचारियों के गांव में आने पर सदियों से गरीबी, अशिक्षा और ब्रिटिश शासन के आतंक में जीने वाले ग्रामीणों की भयातुरता और घबराहट का दृश्य सजीव हो उठा है।

कहीं-कहीं परिदृश्यात्मक प्रविधि का प्रयोग करते हुए रेणु अपने नैरेटर के साथ पात्रों को इस प्रकार मिला देते हैं कि उससे कथा में एक नया स्वाद पैदा हो जाता है। जैसे - ''डिस्टिक बोर्ड से मिस्त्री लोग आए हैं बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है। अफसियर बाबू ने तहसीलदार साहब और रामकृपाल सिंह के सामने ही कहा था। आप तो देश के सेवक है---- यादव टोला के लोगों ने बालदेव से उसी दिन माफी मांग की थी- ***''बालदेव भाई हमलोग मूरख ठहरे और तुम ज्ञानी हमारा कुसूर माफ कर देना।''***

दृश्यात्मक प्रविधि के उपयोग से भी यह उपन्यास भरा हुआ है पात्रों की आपसी बातचीत के माध्यम से लोक पर्तों और मान्यताओं से बनने वाले जीवन चित्रों को हम इसी प्रविधि के माध्यम से देखते हैं।

मैला आँचल के कथा विन्यास (बनावट) में लोक गीतों की भरमार है लगभग 40 छोटे-बड़े गीतों को प्रयोग किया गया है। लेकिन इन गीतों की योजना रेणु ने ऐसे की है कि वे गीत न होकर कथा जीवन के अंग बन गए हैं। जैसे खलासी जी सारंगा-सदाव्रज का गाना गाते है। गाने के क्रय में ही सारंगा-सदाव्रज से कथा निकल कर खलासी जी और फुलिया में तब्दील हो जाती है। सारंगा के रूप में फुलिया कहती है- ***''माँ के लिए नाक की गुलाकी ले आना।''*** ये लोक गीत जहां कथा को आगे बढ़ाते हैं वहीं मेरीगंज के लोक जीवन को भी उभारते हैं।

इस प्रकार, शिल्प की दृष्टि कसे महाभोज एक नाटकीय आवेश का उपन्यास है। इसका कथानक काफी संक्षिप्त परन्तु समकालीन भारतीय राजनीति के बड़े सच को उजागर करने वाला है।